आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : बारहवां | अंक : तीसरा | जुलाई-2014

सोहणा सोहणा मुखड़ा ते 4
एक शब्द

प्रभु 8
(हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(हैदराबाद)

गुरु स्वरूप को कैसे अंदर प्रकट करें? 25
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
(16 पी.एस आश्रम राजस्थान)

अमृतवेला 33
(परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश)

धन्य अजायब 34
(16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम)

संपादक	उप संपादक	विशेष सलाहकार	सहयोगी
प्रेम प्रकाश छाबड़ा 099 50 55 66 71 (राजस्थान) 098 71 50 19 99 (दिल्ली)	नन्दनी	गुरमेल सिंह नौरिया 099 28 92 53 04 096 67 23 33 04	सुमन आनन्द राजेश कुक्कड़ परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 जुलाई 2014 -148- **मूल्य - पाँच रुपये**

सोहणा सोहणा मुखड़ा ते

अहमदाबाद

1. *सोहणा–सोहणा मुखड़ा ते सोहणी–सोहणी खिच्च वे,*
रूह पई उड्डे हवा दे विच वे, (2)
आ सचमुच, (2) दर्श दिखा दाता, मैं दिल दे दुःखड़े फोलां,
इक वारी, आ इक वारी वेहड़े वड़ दाता, मैं वांग पपीहे बोलां,
इक वारी, आ इक वारी, अक्खियां च वस दाता
मुड़ फेर कदी ना खोलां .....

2. *वारो वारी कई–कई जन्मां च पई मैं,*
जागे मेरे भाग तेरे चरनां च आई मैं, (2)
हुण रख लो, आ रख लो रख लो रक्ख दाता,
मुड़ फेर कदी ना रोलां,
इक वारी आ इक वारी .....

3. *सच्चा सुच्चा सावन ते सच्चा कृपाल वे,*
आ गया 'अजायब' तेरे दर ते कंगाल वे, (2)
करां लख–लख, करां लख–लख वारी यश दाता,
तेरे दर ते जिंदड़ी घोलां,
इक वारी आ इक वारी .....

अभी प्रेमी ने शब्द बोला है। जब सेवक के अंदर सच्ची तड़प पैदा हो जाती है, वह दिल का आँगन तैयार कर लेता है गुरु को आवाज लगाता है कि एक बार मेरे दिल के आँगन में आ जा। मेरे दिल में जो है मैं तुझे बताऊँ।

जैसी तड़प इस शब्द में बताई गई है जब सेवक के अंदर इस तरह की तड़प पैदा हो जाए फिर गुरु और सेवक के बीच कोई दूरी

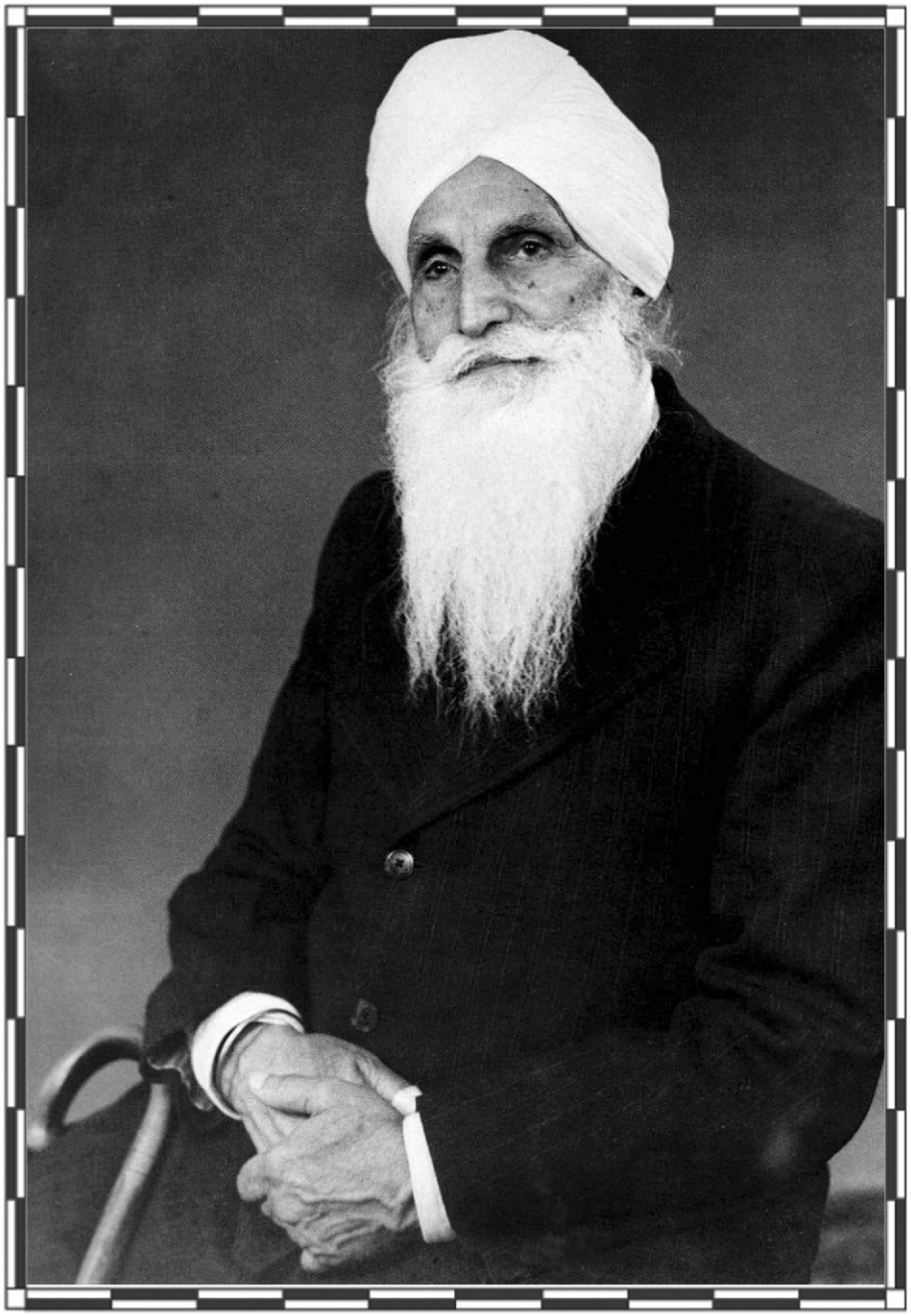

नहीं रह जाती, गुरु सदा ही सेवक के आँगन में आने के लिए तैयार रहता है। कमी हमारे अंदर है क्योंकि हमारे अंदर वैसी तड़प, याद और श्रद्धा नहीं होती जैसी कि गुरु के लिए होनी चाहिए।

हमें सन्त–महात्माओं की बानियों और जीवनी से यही शिक्षा मिलती है कि जो दिल में होता है वही जुबान पर आता है। सन्तों के दिल में अपने गुरु के लिए जो प्यार और आभार था उसे उन्होंने अपनी लेखनियों द्वारा ही प्रकट किया। जब प्रेमी के अंदर तड़प उठती है तो वह गुरु के आश्रम की तरफ जाने वाली हवा को भी संदेश देता है कि तू मेरे गुरु को यह संदेश दे देना। अगर कोई जानवर भी उस तरफ जाता है तो वह उससे भी कहता है कि प्यारेया! अगर तू थोड़ी सी तकलीफ करे तो मेरे प्यारे को संदेश दे देना।

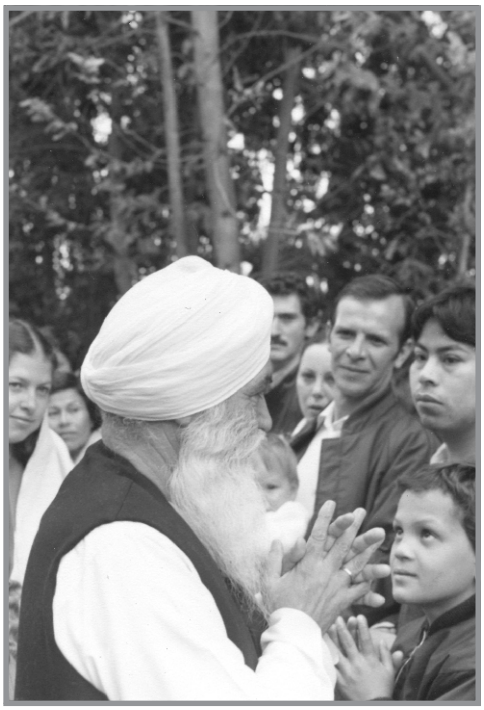

ऐसा मौका सेवक के लिए बहुत अच्छा होता है। जब सेवक गुरु को याद करता है दिल खिला होता है, आँखें पानी से भर जाती हैं और जुबान बंद हो जाती है। यह अवस्था बयान नहीं की जा सकती सिर्फ सेवक जानता है या गुरु ही जानता है जिसके लिए सेवक की आँखों से आँसू बह रहे होते हैं। गुरु से भी रहा नहीं जाता वह प्यार और तड़प की कद्र करता है जरूर आकर सेवक की तड़प को बुझाता है और दिल में बैठ जाता है।

जब से अहमदाबाद का प्रोग्राम मुकर्र हुआ है आप लोगों ने अपने अंदर बहुत तड़प बनाई है। इस तड़प के पीछे भी परमात्मा कृपाल की दया काम कर रही है। वह आप ही संगत में तड़प बनाता है और आप ही इंतजाम करता है। आओ! उसने दया करके हमारे अंदर जो तड़प बनाई है हम मिनट–सैकिंड, सोते–जागते उसकी याद में लगाएं।

मैं आपके साथ अभ्यास में बैठकर, गुरु की याद में बैठकर बहुत खुश होता हूँ। हमें पता है कि गुरु की याद वहीं मना सकते हैं जिनके दिल के अंदर गुरु बैठा है। आप जानते हैं कि आज प्रेमियों ने भजन बोलने हैं, सबके दिल में तड़प है। जिन्हें भजन बोलने का मौका मिलता है वे इस मौके से फायदा उठाएं। भजन बोलने से पहले किताब का पेज नम्बर अवश्य बोलें। पेज नम्बर बोलने से दूसरे प्रेमियों को किताब में से भजन बोलने में मदद मिल जाती है।

जी सतगुरु प्यारे आ मिलो मैनूं, (2) तरस रही जान है मेरी, (2)

1. *जी तेरा कीता जातो मैं नाहीं, (2) जी मैनूं जोग कीतोई, (2)*
   जी सतगुरु प्यारे .....
2. *जी निरगुण हारे कोई गुण नाहीं, (2) जी आपै तरस पेयोई, (2)*
   जी सतगुरु प्यारे .....
3. *जी तरस पया मैं रहमत होई, (2) जी सतगुरु साजन मिलया, (2)*
   जी सतगुरु प्यारे .....
4. *जी 'नानक' नाम मिलै तां मैं जीवां, (2) जी तन–मन थीवै जी हरया, (2)*
   जी सतगुरु प्यारे .....

मैं अपने गुरु कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया। आप सब आँखे बंद करके अपना अभ्यास शुरू करें।

***

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

प्रभु

हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी

हैदराबाद

मैंने कल भी स्वामी जी महाराज की बानी पर सतसंग किया था आज भी स्वामी जी का ही शब्द लिया जा रहा है। सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे इस संसार में अपना कोई मिशन लेकर नहीं आते, वे **प्रभु** का संदेश देने के लिए आते हैं। सन्त-महात्मा किसी जाति, कौम या किसी खास मुल्क के साथ बँधे हुए नहीं होते उनका हृदय बहुत विशाल होता है, उनकी नजर आत्मा पर होती है।

आत्मा प्रभु का निर्दोष बच्चा है अगर कोई बुराई है तो वह मन के अंदर है। हम जानते हैं कि काल ने दुनिया के अंदर झगड़े फैला रखे हैं, अलग-अलग समाज बना रखे हैं और अलग-अलग जुबानों के झगड़े खड़े किए हुए हैं कि यह जुबान बोलनी है वह जुबान नहीं बोलनी। यह पोथी सुननी है वह पोथी नहीं सुननी लेकिन सन्त-महात्मा दो तुकों में ही फैसला कर देते हैंः

होए एकत्र मिलो मेरे भाई, दुविधा दूर करो लिव लाई।
हरनामों की होवो जोड़ी, गुरुमुख बैठो सफा बिछाई।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि प्यारेयो! जो आत्माएं काल के दायरे के अंदर रहती हैं काल ने उन आत्माओं को भुलावे में डाला हुआ है। हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, इसाई, अमेरिकनों और हिन्दुस्तानियों का **प्रभु** एक है। कबीर साहब कहते हैंः

एक नूर ते सब जग उपजया कौन भले कौन मंदे।

सारे संसार की रचना एक नूर से पैदा हुई है हम किसे अच्छा किसे बुरा कहें? क्यों न सबको उस **प्रभु** के अच्छे बच्चे कह दें!

हम एक-दूसरे को बुरा-भला उतनी देर ही कहते हैं जब तक प्रभु के साथ मिलाप नहीं कर लेते, **प्रभु** को अपने अंदर प्रकट नहीं कर लेते। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं :

बुरा भला तिच्चर आखदा जिच्चर है दो माहें।
गुरुमुख इक पछाणेया इको माहें समाहे।।

जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती हैं उनको हर जगह पत्ते-पत्ते के अंदर **प्रभु** दिखता है। मैंने एक शब्द में बताया है:

कोने-कोने ते मैं फिरया, नूर तेरा हर थां मिलया।

हे प्रभु! कुलमालिक आपकी दया से मुझे सारे संसार में जाने का मौका मिला है। मैं जहाँ भी गया मुझे आपका ही नूर मिला। मैंने हर जगह यही कहा कि मैं अपना कोई मिशन लेकर नहीं आया। यह मिशन उन महान सन्तों महाराज सावन-कृपाल का है इस गरीब आत्मा को उनके चरणों में बैठने का मौका मिला। मुझे जो प्यार उन महापुरुषों से मिला मैं उस प्यार को आपके साथ बाँटने के लिए आया हूँ। मैं उनका ही संदेश देने के लिए आया हूँ। मैं एक पुतली की तरह हूँ, मेरी डोर उन गुरुदेव महापुरुषों के हाथ में है, वे जहाँ भेजते हैं मैं वहाँ जाता हूँ। वे जहाँ रखते हैं वहाँ रहता हूँ; यह सब उनका ही खेल है।

गुरु साहब की बानी में आता है कि हम मुँह से मीठी-मीठी बातें करते हैं लेकिन अंदर जहर के झरने बह रहे हैं। यह कह लेना बहुत आसान है कि **प्रभु** सबके अंदर है लेकिन बर्ताव में ऐसा नहीं होता। इससे आम आत्मा के अंदर नफरत पैदा हो जाती है कि इसने कितना अच्छा भाषण दिया, यह सबको कहता था कि प्रभु एक है लेकिन यह सब जुबानी जमा खर्च है। सन्तों का जीवन प्रेक्टिकल होता है।

मैं बताया करता हूँ कि सन्त सारे संसार को और सब समाजों को अपना समझते हैं, वे किसी समाज की निंदा नहीं करते। महात्मा की संगत में कोई रीति-रिवाज़ नहीं होता और न ही कोई कर्म-काण्ड सिखाया जाता है। महात्मा प्रेक्टिकल पर विश्वास रखते हैं। वे न खुद अंधविश्वास में होते हैं और न हमें अंधविश्वास देना चाहते हैं बल्कि वे हमें प्यार से कहते हैं, ''करें और देखें।''

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है वही काम दूसरा आदमी भी कर सकता है। हर इंसान के लिए उम्मीद है, **प्रभु** एक है। प्रभु सबके अंदर बैठा है हर किसी को प्रभु से मिलने का हक़ है।''

सन्त यह नहीं कहते कि हमें ही प्रभु का प्यार प्राप्त है। ऐसा नहीं कि परमात्मा ने किसी खास कौम को अधिकार दे रखा है कि मैं तुम्हें मिलूँगा दूसरों को नहीं। औरत भी उतनी ही हकदार है जितना एक मर्द है। हम सभी **प्रभु** का प्यार प्राप्त कर सकते हैं, प्रभु हम सबके अंदर है। स्वामी जी महाराज का शब्द है गौर से सुनें:

सावन आया मास दूसरा। सास मरी घर आया ससुरा।।

स्वामी जी महाराज प्यार से कहते हैं कि 'नाम' मिला हुआ है, अन्त समय में 'शब्द' प्रकट हो जाता है आशा और तृष्णा खत्म हो जाती हैं। बहुत से ऐसे वाक्य देखे जाते हैं कि सतसंगियों की सुरत पहले ही अंदर लग जाती है। परिवार के लोग उसको कारोबार की बातें सुनाते हैं लेकिन वह तवज्जो नहीं देता अगर नजदीक कोई बेसतसंगी बैठा है तो वह बात तक नहीं करता। अगर कोई भजन-सिमरन वाला उसके नजदीक बैठा है तो वह उसे प्यार से बता देता है, ''शब्द प्रकट हो गया है, मुझे गुरु लेने के लिए आ गए हैं।''

अच्छे अभ्यासियों को कई-कई दिन पहले पता लग जाता है। कुछ दिन पहले ही बहुत से सतसंगियों ने देखा है कि पप्पू के पिता ने अपनी संसार की यात्रा पूरी की। उसे गुरु पर पूरा भरोसा था। वह अपने बच्चों को भी कह गए, ''बेटा! गुरु का पल्ला मत छोड़ना, साध-संगत मत छोड़ना।''

प्यारेयो! जो करते हैं वे देख लेते हैं। जो नाम लेकर जुबानी जमा खर्च करते हैं फिर वे कहें कि अंत समय में हमारा गुरु आएं! सोचें! गुरु ने आपसे कोई कर्ज तो नहीं लिया होता? फिर भी वह दयालु होता है, सन्त अपनी दया का अंग नहीं छोड़ते फिर भी आकर संभाल करते हैं। जब 'शब्द' प्रकट हो जाता है तो 'शब्द' दुनिया के सामान का मोह नहीं रहने देता।

काली घटा श्याम मन हुआ। श्याम कंज में यह मन मूआ।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''सारी जिंदगी विषय-विकार भोगे, शराबों-कबाबों की लज्जतें ली; मन को दुनिया के भोगों में फँसा लिया। मन काला स्याह हो गया अगर फिर भी 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं मन-इंद्रियों के घाट से ऊपर आते हैं तो पहली मंजिल सहँस दल कमल पर पहुँच जाते हैं तब मन बेदाग हो जाता है अंदर शब्द के साथ जुड़ जाता है।''

गरजे बादल चमके बिजली। मनसा मोड़ी आसा बदली।।

स्वामी जी महाराज प्यार से बताते हैं, ''अगर अँधेरी रात है झक्खड़ चल रहा है हम रास्ता भूल जाते हैं उस समय हमें बहुत परेशानी होती है कि हमारा घर दाएँ-बाएँ या पिछली तरफ है! उस समय हम किसी आवाज को सुनकर अपनी डायरेक्शन कायम कर लेते हैं कि हमारा घर, बस्ती दाएँ-बाएँ, पीछे या आगे है।''

अभी हम भूले हुए हैं। रास्ते में ऊँची-नीची घाटियाँ हैं, बहुत खड्डे हैं अगर हमारे हाथ में कोई टॉर्च वगैरह हो तो हम आसानी से उस रास्ते को तय कर सकते हैं। हमें उस आवाज से अपनी डायरेक्शन का पता लग जाता है। इसी तरह उस **प्रभु**-परमात्मा ने हमारे अंदर अपनी आवाज और अपना प्रकाश भी रखा हुआ है। हर महात्मा ने अपनी बानी में उस आवाज और प्रकाश का जिक्र किया है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

अंतर जोत निरंतर बानी, सच्चे साहेब स्यों लिव लाई।

वह बानी लिखी, पढ़ी और बोली नहीं जाती। वह बानी सबके घट के अंदर है। गुरु नानकदेव जी महाराज फिर कहते हैंः

पूरे गुरु की सांची बानी, सुखमन अंदर सहज समानी।

जब हम अपने ख्यालों को नौं द्वारों से निकालकर आँखों के पीछे आ जाते हैं पहली मंजिल पर पहुँचते हैं वहाँ शब्द की आवाज साफ आती है। वह शब्द हमें अब भी सुनाई देता है लेकिन खींचता नहीं क्योंकि खींचने वाली ताकत हमारी आँखों के ऊपर आ गई है लेकिन अभी हम दुनिया के विषय-विकारों, मान-बड़ाई के कारोबार में फिरते हैं इसलिए वह आवाज ऊपर नहीं खींचती।

आप प्यार से कहते हैं कि सतगुरु 'नामदान' के समय सेवक को पाँचों मण्डलो का पूरा भेद देते हैं। उस प्रकाश के मुत्तलिक समझाते हैं कि बेटा! किस मंजिल पर कैसा प्रकाश आएगा, किस तरह की आवाज आएगी? दस प्रकार की धुनें इस जगह पर मुक्कमल सुनाई देती हैं; कहीं बिजली चमकती है, कहीं प्रकाश है।

सुरत निरत की झड़ियाँ लागीं। धुन अनंत शब्दन से चालीं।।

आप प्यार से कहते हैं, ''हम सिमरन के जरिए अपने ख्याल को आँखों के पीछे लाते हैं। हमारी आत्मा पर स्थूल, सूक्ष्म, कारण

के तीन पर्दे चढ़े हुए हैं। आशा और तृष्णा दो ताकतें हैं इसी तरह निरत और सुरत दो शक्तियाँ हैं। निरत देखने वाली शक्ति को और सुरत सुनने वाली शक्ति को कहते हैं।''

महाराज जी बताया करते थे, ''जब तक आप आँखों से बाहर बैठे हैं अंदर आपकी निरत काम नहीं करती। हम बैठते हैं तो कहते हैं कि प्रकाश आया बड़ी जल्दी गुम हो गया। इसका कारण है कि अभी हमारी निरत नहीं खुली अगर हमारी निरत खुल जाती है तो हमारी सुरत के अंदर वह शक्ति पैदा हो जाती है जिसके साथ हम शब्द पर सवार होकर हर मण्डल को तय कर सकते हैं।''

मैंने बताया था कि सिमरन शब्द के साथ जुड़ने का एक जरिया है और 'शब्द' मंजिल है। हम हर मंजिल को शब्द के जरिए ही पार कर सकते हैं, आगे जा सकते हैं।

वृद्ध अवस्था चेतन लागी। काल आय जब सिर पर गाजी।।

स्वामी जी महाराज ने पहले नामलेवा की हालत बताई कि वह किस तरह अंदर जाकर गुरु की दया प्राप्त करता है और किस तरह गुरु अन्त समय में उसकी संभाल करता है।

अब आप प्यार से उसके मुत्तलिक बताते हैं जिसे गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला। बूढ़ा हो गया मौत के फरिश्ते पल-पल आते हैं। कभी किसी बीमारी ने आ घेरा। कभी बुखार हो गया कभी दस्त लग गए। ये सब मौत के प्यादे हैं, मौत का संदेश देते हैं कि अब तो प्रभु के मुत्तलिक कुछ सोच! **प्रभु** का भजन कर लेकिन जब वृद्ध हो जाते हैं तो दुनिया की आशा, तृष्णा, ख्वाहिशें घेर लेती हैं। दुनिया को कहता है कि मैं यह भी करूँ, वह भी करूँ; बल्कि दुनिया से और प्यार बढ़ा लेता है। सब कुछ अपना इक राम पराया।

जमपुर से अब सतगुरु राखें। बहुतक जीव मौत दर ताकें।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''वृद्ध हो गया फिर भी **प्रभु** की तरफ नहीं आता, नाम की तरफ नहीं आता। अभी भी उस ताकत के साथ प्यार नहीं जिसने हमारी रक्षा करनी है। नाम नहीं लिया गुरु नहीं पकड़ा अब इसकी रक्षा कौन करे?'' गुरु साहब कहते हैं:

गुरु मंत्रहीणस जो प्राणी, दीर्घन्त जन्म भ्रष्टणे।
कूकर सूकर गर्धव काके खल तुल्हे ।।

अगर नाम नहीं मिला गुरु नहीं मिला तो यह कुत्ते, गधे, साँप, कौए जैसा है। महात्मा हमें इससे ज्यादा क्या कह सकते हैं? उन्होंने तो प्यार से हमारे लिए हिदायतें लिख दी आगे हम उनकी बानियों से फायदा उठाएं या न उठाएं?

स्वामी जी महाराज भी यही कहते हैं कि अनेकों जीव अन्त समय में देखते हैं कि कोई हमारी रक्षा करे। अब जिनके साथ प्यार है वे तो हमारे शरीर तक ही हमारा साथ दे सकते हैं। रिश्तेदारों, बहन-भाईयों, बच्चों को यह पता ही नहीं कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और कान पकड़कर ले कहाँ गया, वे उस वक्त हमारी क्या मदद कर सकते हैं? मदद करने वाला तो गुरु है, नाम है जिसने हमारी रक्षा करनी है लेकिन हमने जिंदगी में दोनों के साथ मिलाप नहीं किया।

काल घटा जब आकर छाई। धारा मौत अधिक बर्षाई।।

जिस तरह सावन के महीने में काली घटाएँ आती हैं बहुत जोर से बारिश होती है इसी तरह वृद्ध अवस्था में मौत का फरिश्ता भी जोर दिखाता है। मौत चारों तरफ से आकर घेर लेती है। लड़कों से कहता है, ''किसी अच्छे डॉक्टर को लेकर आओ। मेरी

अच्छी देखभाल करवाओ मैं कुछ समय और रह जाऊँ!'' लेकिन मौत का फरिश्ता किसका इंतजार करता है, किसके साथ लिहाज़ करता है? वह कब कहता हैं कि तू सारे काम कर ले मैं तुझे फिर ले जाऊँगा। पता नहीं मौत के फरिश्ते ने कब गर्दन दबा देनी है, कब ऊपर वाला साँस ऊपर, नीचे वाला साँस नीचे रह जाना है।

जीव अनेक रहे घबराई। काया गढ़ उन दीन्ह ढवाई।।

आप प्यार से कहते हैं कि उस वक्त जीव मौत का नाम सुनकर घबरा जाता है। कहता हैं कि मेरे पास मौत की बात मत कर। वह काया पर कब्ज़ा कर लेता है और आत्मा पर कब्ज़ा करके उसे अपने साथ ले जाता है।

मेरा चश्मदीद वाक्या है कि हमारे गांव में एक आदमी ने काफी अच्छा मकान बनवाया। वह अभी मकान में अच्छी तरह बैठा भी नहीं था कि मौत का फरिश्ता सामने आ गया। वह मौत के फरिश्ते के साथ बातें करने लगा, ''देख भई! मैंने अभी नया मकान बनवाया है, मुझे इस मकान में बैठ लेने दे। हमारे गांव में एक भंगी है उसका मकान अच्छा नहीं तू उसे ले जा।'' यह मेरा आँखों देखा वाक्या है। मैं उस समय वैद्य था, उसको दवाई-बूटी दे रहा था लेकिन मौत का फरिश्ता कब किसकी इंतज़ार करता है?

जमपुर जाय जीव पछतावें। जम के दूत तिन बहुत सतावें।।

जब चोर, बदमाश लोग पुलिस के हाथ आ जाते हैं तब पुलिस वाले उन्हें थाने में ले जाकर मारते-पीटते हैं। उस वक्त कौन उनकी चीख-पुकार सुनता है, वहाँ कौन उनका हमदर्दी है? अगर कोई कमॉन्डर भी आ जाता है तो वह भी कहता है इसे खूब मारो शायद! इसके पास कोई और माल हो।

प्यारेयो! बाद में पछताने से क्या मिलता है; वहाँ कौन इसकी चीख-पुकार सुने, कौन इस पर रहम करे?

नाना कष्ट देहैं पल-पल में। फिर फाँसी डालें गल गल में।।

आप कहते हैं, ''काल के कष्ट बयान नहीं किए जा सकते। जिस तरह यहाँ मुलज़िमों को फाँसी लगा देते हैं उसी तरह जिन्होंने यहाँ ठग्गियाँ, बेईमानियाँ की होती हैं काल भी उनके साथ वैसा ही सलूक करता है।'' मैं नाभा आर्मी में था, जेल वहाँ से नज़दीक ही थी। हम आँखों से देखते थे, उनकी चीखें सुनते थे कि क्या हालत होती है वहाँ कौन तरस करता है?

कुम्भी नर्क माहिं दें गोते। जीव सहें दुख अति कर रोते।।

आप कहते हैं, ''कुम्भी नर्क घड़े जैसा गिलाजत से भरा होता है इसे उसके अंदर डाल देते हैं वहाँ कौन पुकार सुनता है, इस पर रहम करता है?'' आप यहाँ संसार में भी देखते हैं कि जो ज्यादा बदमाश होते हैं उनको जेल में ज़ंजीरों से बाँधकर रखते हैं। संसार का कानून भी माफ नहीं करता, बाहर नकल है अंदर असल है।

आप गरुड़ पुराण, नासिकेत पुराण पढ़कर देखें! जीव को नर्कों में कितने-कितने कष्ट सहने पड़ते हैं। महात्माओं ने हमें डराने के लिए ये कहानियाँ या ग्रंथ नहीं लिखे। उन्होंने सच्चाई को देखा और उसी सच्चाई को बयान किया कि आप लोग बचें, अपने जीवन को बर्बाद न करें।

वे निरदई दया नहिं लावें। अति त्रास से जिव मुरझावें।।

उनके अंदर दया नहीं वे निर्दयी हैं। वहाँ जब दूसरी आत्माओं को कष्ट दिए जाते हैं उनको देखकर यह दुखी होता है पछताता है। मैं जब पहली बार अमेरिका जाने लगा दिल्ली में इंजेक्शन लगना

था, पप्पू का पिता भी साथ था। किसी ओर को इंजेक्शन लग रहा था उसे देखकर पप्पू का रंग पीला पड़ गया। पप्पू के पिता ने कहा, ''ओए! तू क्यों डरता है? तू फौजी का बेटा है।'' मैंने कहा, ''तू जा भी फौजी के साथ जा रहा है।'' आप देख लें! किसी को एक इंजेक्शन लगता हुआ देखकर हम इतने भयभीत हो जाते हैं, हमारा रंग ही बदल जाता है तो जब हम ऐसे कष्ट देखते हैं, दुख सहते हैं उस वक्त क्या हालत होती है?

अगिन खंभ से फिर लिपटावें। हाय हाय कर तब चिल्लावें।।

आप प्यार से कहते हैं, ''फिर वहाँ कौन-सा उसे माफ कर देते हैं। जिनका यहाँ आला क्रेडिट नहीं होता उनको वहाँ तपते हुए खंभों के साथ चिपटाया जाता है। यह हाय! हाय! करता है, बहुत चिल्लाता है लेकिन कोई इसकी पुकार नहीं सुनता। यह हाथ छुड़ाता है वे फिर तपते हुए खंभो के साथ चिपटा देते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी कभी-कभी सतसंग में जिक्र किया करते थे कि अंदर काल ने बड़े-बड़े खंभे तपाए हुए हैं मलीन आत्माओं को उन तपते हुए खंभो के साथ चिपटाया जाता है। अगर उस खंभे की एक चिगांरी भी इस संसार में आ जाए तो यह संसार जल जाएगा। अंदर जाकर आत्मा काँपती है। ये कष्ट वही भोगते हैं जिन्होंने इंसानी जामें में आकर **प्रभु** की भक्ति, नाम की भक्ति नहीं की लापरवाही की कि मुझे किसी गुरु-पीर के पास जाने की क्या जरूरत है, नाम जपने की क्या जरूरत है?

सुने न कोई मुश्किल भारी । सर्पन माला ले गल डारी।।

स्वामी जी कहते हैं, ''वहाँ बहुत भारी मुश्किल है, वहाँ कोई चीखों-पुकार नहीं सुनता खंभों के साथ चिपटाकर भी इसे नहीं छोड़ते। गले में साँपों की माला डाल देते हैं, साँप इसे काट-काटकर

खाते हैं। हम संसार में एक साँप देख लें तो जान बचाने के लिए भागते हैं अगर कोई हमारे गले में साँपों की माला डाल दे तो क्या हालत होती है? इंसानी जामें में लापरवाही की 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं की वहाँ कौन इसकी पुकार सुनता है? पुकार तो गुरु ने सुननी थी लेकिन गुरु के पास गए नहीं नाम प्राप्त नहीं किया।''

मार-मार चहुं दिस से होई। पति गति अपनी सब विधि खोई।।
नर्कन में अति त्रास दिखावें। फिर चौरासी ले पहुंचावें।।

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि यह पहले वृक्षों, सब्जियों में आकर जन्म लेता है। वृक्ष की योनि में बहुत समय रहना पड़ता है। वृक्ष बड़ी-बड़ी उम्रों वाले होते हैं। उसके बाद यह कीड़े पतंगो की योनि में आता है फिर सर्प की योनि में आता है। सर्प की योनि बहुत मुश्किल है, सर्प की उम्र बहुत लम्बी होती है। सर्प के अंदर बहुत जहर सड़ती है, गर्मी करती है। फिर चौपाए जानवरों की योनि में आता है, वहाँ काफी समय रहना पड़ता है।

प्यारेयो! चौरासी लाख योनियां भुगतने के बाद इंसानी जामे की बारी आती है लेकिन इंसानी जामें में भी लापरवाही करके यह समय बिता देता है। अगर हम हर जामें की थोड़ी-थोड़ी औसतन मुनियाद भी लगाएं तो इंसानी जामें में आने के लिए करोड़ों युग लग जाते हैं। हमें चौरासी के धक्के क्यों खाने पड़े? **प्रभु** ने हमें इंसानी जामा तोहफा दिया था लेकिन हमने इस जामें से फायदा नहीं उठाया। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

लख चौरासी जून सवाई, मानस को प्रभ दी वडियाई।
इस पौड़ी ते जो नर चूके, सो आए जाए दुख पाऐंदा।।

गुरु भक्ति बिन यह गति पाई। नर देही सब बाद गँवाई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''नर्कों में, ऐसी योनियों में जाकर आत्मा की दुर्दशा क्यों हुई क्योंकि गुरु धारण नहीं किया, नाम नहीं लिया इसलिए कष्ट सहना पड़ा। ऐसी जगह गुरु ने हमारी रक्षा करनी थी।''

ठंडे दिल से सोचें! महात्मा किसी सभा सोसायटी पर अपना बोझ नहीं रखते। महात्मा का जीवन पढ़कर देखें! तो पता लगता हैं कि वे खेती, नौकरी या दुकानदारी करके अपना निर्वाह करते हैं और साध-संगत की मुफ्त सेवा करते हैं। जो महात्मा हमसे कुछ न माँगे अगर हमें ऐसा कोई मुफ्त का नौकर मिल जाए फिर भी हम उससे फायदा न उठाए तो हमारी कितनी बदकिस्मती है!

महाराज सावन सिंह जी एक बहुत अच्छी मिसाल दिया करते थे, ''एक जमींदार किसी दुकान पर सौदा लेने के लिए गया उसने सौदा ले लिया लेकिन दुकानदार पैसे लेने भूल गया। जमींदार सौदा लेकर चला जा रहा है और रास्ते में दुकानदार को भला-बुरा भी कह रहा है कि पता नहीं इसने कितना कमा लिया होगा? हमारी भी यही हालत है हम सोचते हैं! कौन ऐसे मुफ्त में सेवा करता है? ऐसे रुहानियत के महात्मा प्रभु की तरफ से आते हैं वे बिना किसी मुआवजे के आत्मा की सेवा करते हैं।''

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सन्त-महात्मा किसी से अपनी तालीम की फीस नहीं लेते। जिस तरह कुदरत का कानून है कि वह हर एक को हवा, पानी और रोशनी मुफ्त देती है इसी तरह महात्मा भी संसार में अपनी दया दृष्टि मुफ्त बाँटते हैं।''

जो जो भजन भक्ति से चूके। तिन के मुख जम पल पल थूके।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जो मनुष्य योनि में आकर चूक गए, जिन्होंने गुरु भक्ति, नाम भक्ति नहीं की यम उनके मुँह पर पल-पल थूकता है। यम कहता है कि तुम्हारा मुँह तो देखने के काबिल नहीं है; तुम यहाँ क्यों आए हो?'' गुरु नानकदेव जी तो इससे भी सख्त लिखते हैं :

नाम हीन नकटे नर देखे, तिन घस घस नाक वडीजे।

प्यारेयो! जिन्हें सतगुरु से नाम नहीं मिला काल उनकी नाक काट देता है। वे नकटे नजर आते हैं, कुरुप दिखते हैं।

ऐसी कुगति होयगी सब की। जो नहिं धारें सतगुरु अब की।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि मेरा उपदेश किसी खास कौम या मजहब के लिए नहीं है। अगर हम **प्रभु** की भक्ति, नाम की भक्ति नहीं करेंगे तो सबकी यह कुगति होगी क्योंकि यम किसी का लिहाज़ नहीं करता। किसी और जामें में प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती। प्रभु हमें इंसानी जामे का तोहफा देता है कि तू इस जामें में मेरी भक्ति कर मेरे साथ मिलाप कर। गुरु हमें नाम का तोहफा देता है लेकिन हम उस नाम की कद्र नहीं करते।

सतगुरु बिना कोई नेहिं बाचे। नाम बिना चौरासी नाचे।।

आप कहते हैं, ''गुरु के बिना न कोई तरा है न तर ही सकता है। नाम के बिना चौरासी लाख योनियों में अवश्य जाना पड़ता है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं :

नाम विसार चले अन्मार्ग अन्त काल पछताई है।

नाम की कमाई छोड़कर, शब्द की कमाई छोड़कर हम बेशक कितने भी श्रेष्ठ रस्ते पर चलते हैं फिर भी अन्त समय पछताना पड़ेगा। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

कर्म धर्म पाखंड जो दीसे तिस जम जोगाति लूटे।
निर्वाण कीर्तन गाओ हर करते का निमख सिमृत जित छूटे।
कोट तीर्थ मजन स्नाने इस कल में मैल भरीजे।
साध संग जो हर गुण गावे सो निर्मल कर लीजे।।

धन्य भाग हम सतगुरु पाया। चढ़ी सुरत मन गगन समाया।।

आप प्यार से कहते हैं, ''हमारे बहुत ऊँचे भाग्य थे, **प्रभु** ने हम पर बहुत दया की हमें अच्छे कर्मों का ईनाम हमारा मिलाप गुरु से करवाया; नाम मिल गया। गुरु की दया-मेहर से हम मन-इंद्रियों के भार से ऊपर आकर गगन-आँखों के पीछे तीसरे तिल से और ऊपर चले गए। जो यहाँ पहुँच जाते हैं उन्हें पता है कि शांति क्या चीज़ है, गुरु क्या हैं; नाम किस ताकत को कहते है?''

सुन्न मंडल जाय झूला झूली। सावन मास लिया फल मूली।।

जिस तरह लोग सावन के महीने में झूला झूलते हैं खुश होते हैं इसी तरह जब आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म, कारण के तीनों पर्दे उतर जाते हैं आत्मा दसवें द्वार पहुँच जाती है तो वहाँ जाकर इसे होश आती है कि मेरा भी **प्रभु** है। वहाँ पहुँचकर लिंग भेद खत्म हो जाता है। वहाँ यह न औरत है न मर्द है; न काली है न गोरी है; न अमरिका की रहने वाली है न हिन्दुस्तान की रहने वाली है, यह तो आत्मा है। यहाँ मात-लोक में आकर आत्मा ने इन पर्दों के नीचे अपना प्रकाश गुम कर लिया था।

सखियाँ सब मिल गावन लागीं। माया ममता देखत भागीं।।

आप प्यार से कहते हैं, ''महात्माओं की आत्माएँ वहाँ पहुँचकर **प्रभु** के गुणगान करती हैं और ये आत्माएं भी वहाँ पहुँचकर मस्त होकर प्रभु का गुणगान करती है। वहाँ माया के मंडलों का ज़ोर खत्म हो जाता है; वहाँ तो प्योर पवित्र आत्मा है।''

सभी सुहागन झूलें घर घर। पिया अपने को हिरदे धर धर।।

जिस तरह सुहागन लड़कियाँ सावन के महीने में झूले झूलती हैं, अपने पति के चरणों में रहकर सुख महसूस करती हैं। अगर किसी औरत का पति गुजर गया हो या परदेस गया हो तो वह बेचारी दुखी होती है कष्ट भोगती है। मुझे पता है जिन अच्छी औरतों का जवानी में ही पति से बिछोड़ा पड़ जाता है उनको कितना कष्ट होता है।

मैं जब कोलंबिया गया उस वक्त ईरान में अमरिका के लोग बंदी बनाए हुए थे। वहाँ एक औरत बहुत पैसा खर्च करके उत्तरी अमेरिका से हवाई जहाज का लम्बा सफर करके दक्षिण अमेरिका में मुझसे मिलने आई उसका पति उन बंदियों में था। वह बहुत भावना में आकर पूछने लगी, ''मैं आपकी शोभा सुनकर आई हूँ। आप मेरे ऊपर दया करें मुझे बताएं क्या मेरा पति मुझे मिल जाएगा, क्या मेरा पति जिंदा है क्या वह मेरे पास आ जाएगा?''

क्या हमारे दिल में कभी यह ख्याल आया कि हमारा पति परमात्मा युगों-युगों से हमसे बिछड़ा हुआ है? क्या कभी हमारे दिल में उसकी याद आई! क्या हम उसकी याद में तड़पे! रात को जागे! हमारा पति हमसे बिछड़ा हुआ है?

पिया बिमुख तरसें बहुत नारी। जिनके पति परदेश सिधारी।।
तिनको सावन काला नागा। डस डस खावे लागे आगा।।

आप कहते हैं, ''जिनके पति परदेस गए हुए हैं या गुजर गए हैं उन औरतों को सावन का महीना इस तरह मालूम होता है जैसे साँप डस रहे हैं। उनको कोई तीज़ त्यौहार अच्छा नहीं लगता। क्षण-क्षण में दिल दुखता है।''

प्यारेयो! जिनका जिंदगी में गुरु से मिलाप हो गया, जिन्हें नाम मिल गया उन्होंने गुरु को अंदर प्रकट कर लिया उन्हें ही इंसानी जामे की खुशी है।

बाहर वर्षा रिमझिम होई। घट में उनके अग्नि समोई।।

बाहर बारिश है अंदर आग लगी हुई है। आजकल के प्रचारको की यही हालत है कि अपने घर में आग लगी हुई है और पानी की बाल्टियां लेकर लोगों के घरों की आग बुझा रहे हैं। लोगों के परोपकार की सोचते हैं कि आप इस तरह भक्ति करें यह कर्म-धर्म करें लेकिन उनका खुद का हृदय काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से सड़ रहा है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

पहले मन परबोधे आपणा पीछे अवर रिझावे।

पहले अपने आपको शांति देनी थी फिर लोगों पर उपकार करते तो ज्यादा बेहतर होता।

अग्नि लगी मानो तन मन फूँका। उनके भावें पड़ गया गया सूखा।।
तीज त्योहार कछू नहिं भावे। मन में दुख, नहिं हर्ष समावे।।
पिया बिन सावन कैसा आया। जेठ तपन जस जीव जलाया।।

दोहा

जीव जले विरह अग्नि में, क्योंकर शीतल होय।
बिन वर्षा पिया बचन के, गई तरावत खोय।।
जिन को कंत मिलाप है, तिन मुख बरसत नूर।
घट सीतल हिरदा सुखी, बाजे अनहद तूर।।

***

DVD - 136

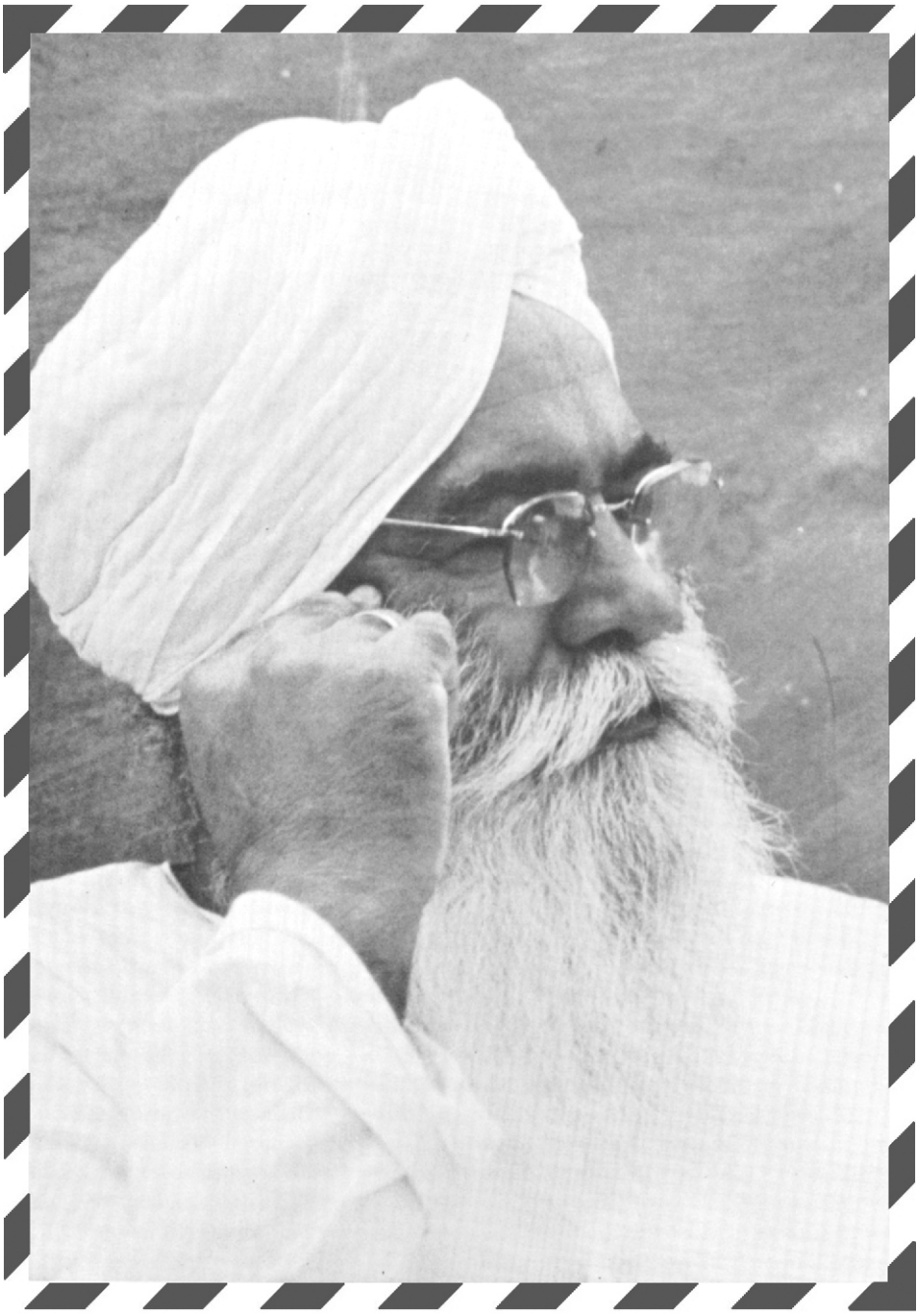

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

गुरु स्वरूप को कैसे अंदर प्रकट करें?

16 पी.एस आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी: *जब कोई सेवक अभ्यास के जरिए अंदर जाकर गुरु स्वरूप तक पहुँचने की कोशिश करता है लेकिन वह गुरु स्वरूप तक पहुँचने में कामयाब नहीं होता, अंदर सिर्फ आवाज ही सुन सकता है या सिमरन ही कर सकता है। क्या तब तक सेवक को अंदर गुरु के स्वरूप का ध्यान करना चाहिए या अपना काम करते जाना चाहिए कि जब तक गुरु उसे अपने दर्शन देने के लिए ठीक न समझे कि सेवक ने काफी तरक्की कर ली है?*

बाबा जी: यह सवाल हर सतसंगी के लिए बहुत अच्छा है। सबसे पहली बात तो यह है कि जब कोई सेवक मेहनत करता है तो अंदर प्यार भी अपने आप पैदा हो जाता है। मेहनत प्यार को पैदा करने का एक तरीका है। जब अंदर प्यार पैदा हो जाता है तो प्रेमी उसे बोझ नहीं समझता फिर प्रेमी को समय का भी पता नहीं चलता। प्रेमी यह नहीं चाहता कि मुझे कोई मुआवजा मिले मैं फिर ही यह काम करूंगा।

जिस तरह तूफानी नाला जोर से बहता है उसी तरह प्रेम बहुत जबरदस्त कशिश पैदा करता है; यही लहर प्यार और प्रेम की है। प्यार एक शक्ति है इसमें ऐसी कशिश है अगर दुनियावी तौर पर भी हमारा किसी से लगाव या प्यार हो जाता है तो सिर्फ उसे याद करने की ही जरूरत पड़ती है उसका नक्श ऊँचा, लंबा, गोरा, काला सब कुछ आँखो के आगे आ जाता है।

'शब्द' सब जगह व्यापक है। वह हाथी की पुकार बाद में कीड़ी की पुकार पहले सुनता है। सच तो यह है कि हम सोचते बाद में हैं

वह सुन पहले लेता है। वह हमें जवाब भी देता है क्योंकि वह हमारे अंदर बैठा है लेकिन फिलहाल हमने यह अनुभव प्राप्त नहीं किया होता जिससे हम और ऊपर जा सकें।

महाराज सावन सिंह जी ध्यान पर बहुत जोर दिया करते थे लेकिन महाराज कृपाल इस तरफ जोर नहीं देते थे। हर सन्त के समझाने का अपना-अपना तरीका होता है। आप सदा कहा करते थे कि हमने सिमरन द्वारा नौं द्वारे खाली करने हैं। हम जब नौं द्वारे खाली करके अपने ख्याल को आँखों के पीछे ले आते हैं उस वक्त ध्यान की जरूरत पड़ती है क्योंकि सुरत जाती है वापिस आ जाती है बगैर ध्यान सुरत वहाँ टिक नहीं पाती।

इस मुत्तलिक महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जब हम सतसंग में बैठते हैं हम उस समय भी ध्यान को पका सकते हैं। जब हम चलते-फिरते सिमरन करते हैं उस स्वरूप को उस समय भी आँखों के आगे रख सकते हैं। हम अभ्यास में बैठकर इस कमी को पूरा करना चाहते हैं जो पूरी नहीं होती। यह कमी हम पहले ही पूरी कर सकते हैं अगर हमारा ध्यान चलते-फिरते हुए और सतसंग के जरिए ही बन जाता है तो हमें बैठकर घुटने अकड़ाकर इंतजार करने की जरूरत नहीं पड़ती कि अब हमारा ध्यान बने क्योंकि ध्यान तो पहले ही बन चुका होता है।

मैं चश्मदीद वाक्या बताया करता हूँ कि जब कभी महाराज सावन सिंह जी दया करके सेवा करने वाले शिष्यों को अपने हाथ से रोटी देते उस समय वे प्रेमी फुल्का हाथ से पकड़ लेते थे लेकिन उनका ध्यान महाराज जी के भरवटों के बीच ही होता था। आप नए भजन में पढ़ते हैं:

लक्खां शक्लां तक्कियां अक्खियां ने, कोई नजर मेरी विच खुबदी ना।

हे सावन! मैंने बहुत शक्लें देखी लेकिन मेरी आँखों में कोई शक्ल जंची नहीं, तेरी शक्ल मेरी आँखों से अलग नहीं हुई। मैंने आपकी संगत में ऐसे कई सेवक देखे और मैं खुद भी यह प्रेक्टिस करता रहा हूँ कि जब सतसंग होता चाहे पिछली तरफ कोई आवाज हो तो भी सतसंगी पीछे नहीं देखता था। उन लोगों के ध्यान यहाँ तक पके हुए थे कि उन्हें मालूम नहीं होता था कि कौन सा पाठी पाठ कर रहा है? या महाराज जी किसी से बात भी कर रहे हैं।

सतसंगी का ध्यान आपके पवित्र चेहरे पर लगा होता था। सतसंग के बाद सतसंगी आम किसी से बात नहीं करते थे। चुपचाप अपने घरों में चले जाते, वहीं सिमरन करते या बैठकर उस स्वरूप की प्रेक्टिस करते। आप देख सकते हैं! जिनका इस तरह का ध्यान बन जाता है उन्हें बैठकर ध्यान करने की क्या जरूरत है? वे जब सोते या जागते हैं तब भी शक्ल आँखों के आगे है। वे जब चलते हैं तब भी उन्हें यही लगता है कि वह शक्ल साथ ही चल रही है।

हम महाराज कृपाल सिंह जी का इशारा समझ नहीं सके। आपका यह मतलब नहीं था कि आप ध्यान न धरें। आप कहते थे, ''खुदा वह है जो खुद आए।'' आपके समझाने का भाव यह था कि जब हम प्रेम-प्यार से सिमरन करेंगे तो मन को अपने आप ही पता लगेगा कि हम किसका दिया हुआ सिमरन कर रहे हैं? ध्यान अपने आप ही आ जाएगा।

शुरू-शुरू में हमें स्वरूप को आँखो में टिकाने में थोड़ी कठिनाई होती है। कभी पगड़ी नजर आती है कभी आँख नजर आती है कभी जिस्म ज्यादा, कभी कम नजर आता है। कभी ऐसा लगता है कि स्वरूप आया, चला गया। स्वरूप वहीं पर मौजूद है न आता है न जाता है। सेवक अभी उस जगह थिर नहीं हुआ लेकिन जब हम

थोड़ा सा संघर्ष करते हैं, अभ्यास में महारत पैदा हो जाती है फिर हमें संघर्ष नहीं करना पड़ता अपने आप ही ध्यान बन जाता है।

बहुत से प्रेमी रोजाना लगातार अभ्यास नहीं करते। वे जब बैठते हैं तो उन्हें अंदर शान्ति प्राप्त होती है; थोड़ी बहुत रसाई होती है लेकिन फौरन ही उनका ख्याल कभी ध्यान की तरफ कभी सिमरन की तरफ बँट जाता है वे खींचतान में ही रह जाते हैं।

मैं कहा करता हूँ, ''अभ्यास में बैठने से पहले पाँच पवित्र नामों को याद करें। आपको अपने आप पता लग जाएगा कि हम किसका दिया हुआ सिमरन कर रहे हैं? वह स्वरूप अपने आप ही आपकी आँखों के आगे आ जाएगा जो तीसरे तिल से शुरू होकर सच्चखंड तक आपके साथ जाएगा।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अकाल मूर्त है साध संतन की ठहरने की ध्यान को।

एक बार महाराज कृपाल अपने गुरुदेव की सेवा कर रहे थे। उस समय आपने अपने गुरुदेव महाराज सावन सिंह जी से पूछा, ''अंदर और बाहर कितना फर्क है?'' महाराज सावन ने हँसकर कहा, ''कृपाल सिंह! जो कुछ यहाँ देख रहे हो अंदर भी ऐसे ही दिखेगा। यह स्थूल शरीर यहीं छोड़ जाना है, अंदर शब्द है। सन्त देहधारी शब्द होते हैं।'' गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

रूप न रेख रंग ठाकुर अविनाश।
सो स्वरूप संतन कथे विरले योगिश्वर।
कर कृपा जाको मेले धन धन ते ईश्वर।।

परमात्मा का कोई रूप नहीं, रेख नहीं। उसका कोई भाई बंधु शरीक नहीं वह हर जगह व्यापक है। जब हमने वेद-शास्त्रों की कथा-कहानियां सुनी तो दिल में तड़प हुई कि परमात्मा से मिलना चाहिए वह अविनाशी है।

उस स्वरूप का कथन सिर्फ सन्त ही कर सकते हैं। उनका देह धारण करने का मकसद यही होता है कि हमें जन्म-जन्मांतरो से ही ध्यान धरने की आदत बनी हुई है। दुनिया का ध्यान ही हमें बार-बार देह में लेकर आता है। सन्त जानते हैं कि पानी की मारी खेती पानी से ही हरी होगी। वे दुनिया के सिमरन को काटने के लिए अपना कमाया हुआ सिमरन देते हैं जिसके पीछे उनका तप-त्याग काम करता है। जब हम दुनिया का सिमरन छोड़कर उनका दिया हुआ सिमरन जुबान पर लाते हैं, प्यार से उनके स्वरूप का ध्यान करते हैं तो दुनिया का ध्यान कट जाता है और हमें अंदर टिकने की आदत पड़ जाती है।

रही बात आवाज तो सुनाई देती है लेकिन स्वरूप प्रकट नहीं होता? उन प्रेमियों में सिमरन की कमी होती है वे आवाज सुनने पर तो जोर देते हैं लेकिन सिमरन पर जोर नहीं देते। देखने वाली शक्ति निरत और सुनने वाली शक्ति सुरत हैं। अगर वे नौं द्वारे खाली करके सिमरन पर ज्यादा जोर दें तो निरत खुल जाती है। यहाँ आकर सेवक कई बार बहुत उदास भी होता है कि मुझे आवाज तो बड़ी जबरदस्त आती है लेकिन स्वरूप प्रकट नहीं होता उसका कारण यही है कि अभी हमारा सिमरन नहीं पका।

अंदर शब्द की आवाज है लेकिन वह खींचती नहीं क्योंकि अभी हमारी आत्मा उस दायरे में नहीं गई। यह इस तरह है जैसे इच्छाधारी सर्प की देह बहुत भारी होती है वह खुद जाकर शिकार नहीं मारता जो उसके दायरे में आ जाता है वह उसकी कशिश से खिंचा हुआ सर्प के मुँह में आ जाता है। इसी तरह जब हमारी सुरत शब्द के दायरे में जाएगी तो शब्द इसे खींचकर ऊपर ले जाएगा और देखने वाली निरत खुल जाएगी।

सेवक यह सोचता है शायद! मैं इस काबिल नहीं या गुरु मुझे कुछ देना नहीं चाहता। प्यारेयो! ऐसी बात नहीं, गुरु दोनों हाथ से दात देने के लिए हमारी इंतजार में होता है लेकिन हम अभी उस जगह पहुँचे नहीं होते। हम दुनिया के सिमरन में लगे होते हैं। ऐसे मौके पर हम अपने अंदर सिमरन की पड़ताल करें क्योंकि हमें जन्म-जन्मांतरों से दुनिया के सिमरन की आदत पड़ी हुई है। जब हमें जोर से आवाज आती है तो कई बार मन ने हमें दुनिया के सिमरन में लगाया होता है।

मैं पहले जमाने की बात बताया करता हूँ कि सन्त पहले अपने सेवकों को सिमरन दिया करते थे। सिमरन पक जाने पर शब्द का भेद दिया करते थे लेकिन इससे कई बार ऐसा नुकसान होता कि गुरु सिमरन बताकर शरीर छोड़ जाता या सेवक शरीर छोड़ जाता तो सेवक का काम अधूरा रह जाता था। मुक्ति धुनात्मक नाम में है नौं द्वारे खाली करके शब्द के साथ जुड़ने का जरिया सिमरन है। कबीर साहब ने कलयुग के जीवों के ऊपर खास दया की जो इकट्ठा ही नामदान बख्श देते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी के समय में हर सतसंगी की चढ़ाई साथ-साथ करवाई जाती थी। सतसंगी को पता लगता था कि मैं कहाँ पहुँच गया हूँ, मैंने कितनी तरक्की कर ली है। बहुत से सेवक उस कमाई को संभालकर नहीं रखते थे वे लोगों को करामात दिखाने में कमाई खराब कर देते थे। मैंने कल बताया था कि करामात दिखाना काल का बहुत कड़ा कर्म है। सन्तों नें तो हमें इन ताकतों से बचाकर ले जाना होता है।

काबुल के एक घर में सतसंगियों का डेरा था। वहाँ एक बच्चे की मौत हो गई। सतसंगी उस घर के लोगों को रोते-कुरलाते हुए

बर्दाशत नहीं कर सके, उन्होंने उस बच्चे को जिंदा कर दिया। गुरु अर्जुनदेव जी उन सतसंगियों से बहुत खफा हुए। आपने कहा, ''तुम लोगों ने ऐसा क्यों किया? सन्त कुदरत के कानून के मुताबिक ही अपना जीवन जीते हैं और अपने बच्चों से भी यही कहते हैं कि हमने परमात्मा का शरीक नहीं बनना।''

उस वक्त से इस जीव के ऊपर पर्दा डाल दिया गया कि इसे पता न लगे कि मैं कहाँ पहुँचा हूँ! जिन्हें मुनासिब समझते हैं कि ये दुनिया की मान-बड़ाई या दुखों के समय में अपनी कमाई नहीं गँवाएंगे उनसे छिपाकर भी रखते हैं। जिनका हृदय बन जाता है कि ये कमाई संभालकर रखेंगे गुरु अपनी कमाई भी ऐसे प्रेमियों के हवाले करने से नहीं झिझकता।

प्यारेयो! यह तो हम संसारिक माता-पिता में भी देखते हैं कि जो बच्चे काबिल होते हैं माता-पिता अपने जीवनकाल में ही उन्हें अपनी पूंजी सौंप देते हैं और शाबाश देते हैं कि मेरा बच्चा बहुत काबिल है। जो बच्चे घर की जिम्मेवारी नहीं संभालते उनके माता-पिता अंदर से बहुत परेशान होते हैं।

मैं जब अमेरिका, कोलंबिया या और किसी देश में जाता हूँ तो वहाँ मुझे दोनों ही प्रकार के परिवार मिलने आते हैं। जो बच्चे घर की जिम्मेवारी को समझते हैं, अपने आपको तब्दील कर लेते हैं उनके माता-पिता मुझे बहुत प्यार से देखने के लिए आते हैं, धन्यवाद करते हैं कि आपने हमारे बच्चे के लिए बहुत कुछ किया है। जो बच्चे अपने आपको तब्दील नहीं करते उनके माता-पिता भी कभी-कभी प्रेम प्यार से मिलते हैं, कहते हैं कि आपका उपदेश तो ठीक है लेकिन आप इस भले मानस से कहें कि यह घर की जिम्मेवारियों को समझे। इसलिए कबीर साहब ने कहा हैः

माड़ा कुत्ता खसमे गाली।

प्यारेयो! सतगुरु तो तन-मन से अपने बच्चों की बेहतरी सोचता है। वह सदा ही सतसंग में समझाता है कि आप लोग बेहतर बनें। मैं अक्सर बताया करता हूँ कि सतसंगी जितने बेहतर बनेंगे उनसे और लोग भी फायदा उठाएंगे। कम से कम यह पता लगे कि ये फलाने सन्तों के पास जाते हैं इसलिए इनके अंदर तब्दीली आई है, ये सन्तों के सेवक हैं।

इस सवाल का एक हिस्सा यह भी था शायद! गुरु हमें इस काबिल नहीं समझता? प्यारेयो! सतसंगी को ऐसा नहीं सोचना चाहिए। गुरु ने हमें काबिल समझकर ही 'नामदान' अपनी आत्मा का दान दिया है। जब सतसंगी अंदर जाता है तब वह खुद देख सकता है कि गुरु ने मेरे लिए क्या संघर्ष किया है और मेरे लिए कितनी तकलीफ उठाई है? गुरु देने के लिए ही आया है, उसे देकर ही खुशी होती है।

हमारे परमपिता कृपाल ने 26 साल होका दिया। वह देने के लिए आया है सवाल तो लेने वाले का है। हमने जैसे-जैसे बर्तन बनाए उस महान सन्त से हमने वैसा-वैसा प्राप्त किया। वह आज भी हमें दिन-रात दे रहा है, ऐसा नहीं कि वह सच्चखंड जाकर हमें भूल गया। वह आज भी हमें दे रहा है, हमारी संभाल कर रहा है।

प्यारेयो! हमें चाहिए कि हम अपना बर्तन बनाएं। गुरु की दात पर शक न करें कि वह हमें देना नहीं चाहता, वह देने के लिए ही आया है।

***

DVD - 611

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले संदेश

अमृतवेला

आपने तीन-चार दिन सतसंग सुना है, जिसमें यही समझाने की कोशिश की गई है कि आपने भजन-अभ्यास करना है। जिसने दया प्राप्त करनी है वह ज्यादा से ज्यादा भजन-सिमरन करे।

सतगुरु की तरफ से दया हमेशा ही जारी रहती है। परमात्मा बेईंसाफ नहीं वह हर एक की मजदूरी देता है। भजन भक्ति करने वाले प्रभु को इस तरह प्यारे होते हैं जैसे माता-पिता को अपने बच्चे प्यारे होते हैं।

आपने यहाँ जो कुछ सुना है उस पर अमल करना है और अपनी जिंदगी को पवित्र बनाना है। हमारा जिस्म जितना पवित्र होगा उतना ही हमारा मन पवित्र होगा जितना मन पवित्र होगा उतनी ही आत्मा पवित्र होगी। परमात्मा पवित्र है अगर हमारी आत्मा पवित्र है तो परमात्मा उसे फौरन अपने साथ मिला लेता है।

हमने भजन-अभ्यास करने की और अपने जीवन को पवित्र बनाने की कोशिश करनी है। आप दुनियां की जिम्मेवारियां निभाते हुए अपना भजन-सिमरन करें।

* * *

धन्य अजायब

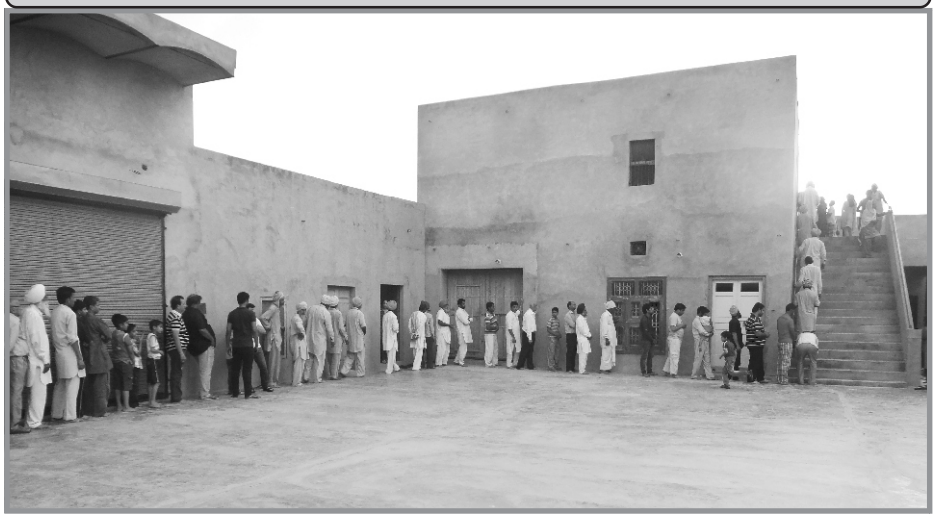

16 पी.एस. आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

1, 2 व 3 अगस्त 2014

7, 8, 9, 10 व 11 सितम्बर 2014

24, 25 व 26 अक्टूबर 2014

28, 29 व 30 नवम्बर 2014

26, 27 व 28 दिसम्बर 2014